December 2020.
Lecture No. 07-08.
Date : 05.12.2020

②

History

B.A. Part-II (Hons.) Paper-III rd.

पाठ्यक्रम Unit-II : Extension and Integration—

(a) Balban

इल्बरी तुर्क जाति के बलबन का मूल नाम बहाउद्दीन था। बसरा के ख्वाजा जमालुद्दीन ने उसे खरीदकर दिल्ली लाया था। जहाँ से इल्तुतमिश ने उसे खरीदकर बाद में अपने 40 गुलामों के दल में शामिल कर लिया। 1265 ई० में नासिरुद्दीन महमूद की मृत्यु के बाद सुल्तान बनने पर बलबन के सामने पहली चुनौती थी, ताज की प्रतिष्ठा को स्थापित कर शासन व्यवस्था को फिर से संगठित करना।

प्रशासनिक व्यवस्था : बलबन ने निरंकुश शासक के रूप में सफलता प्राप्त करने के लिए अपनी निजी प्रतिष्ठा में वृद्धि करने का विशेष प्रयास किया। इसलिए उसने अपने को तुर्की वीर तूरान के अफरासियाब के वंश से जोड़ा। बलबन ने पाया कि सुल्तान की निरंकुशता के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा तुर्की अमीरों के चालीसा का दल था। इसलिए उसने चालीसा के दल की शक्ति को नष्ट करने के लिए निम्न कोटि के तुर्कों को महत्वपूर्ण पदों पर नियुक्त किया तथा प्रजा की दृष्टि में उनका महत्व गिराने तथा उनके दमन के लिए साधारण अपराधों के लिए भी कठोर दण्ड दिया। उसने अमानुषिक व्यवहार के लिए बदायूँ के अक्तादार मलिक बकबक का कोड़े से मारकर हत्या करवा दिया। उसने अपने प्रशासनिक काल का एक मात्र तुर्क विद्रोह जो बंगाल के तुगरिल खाँ के द्वारा किया गया था, का बर्बरता पूर्वक दमन कर दिया।

बलबन ने मेवाती डाकुओं और कटेहर के राजपूत सरदारों का दमन करने के लिए जंगलों को साफ करवाया तथा उनके विरुद्ध "लौह एवं रक्त की नीति" का प्रयोग किया। लौह एवं रक्त की नीति के तहत पुरुषों का कत्ल कर दिया जाता था तथा स्त्रियों एवं बच्चों को दास बना लिया जाता था।

बलबन ने एक केन्द्रीय सैन्य विभाग 'दीवान-ए-अर्ज' की स्थापना की तथा इमाद-उल-मुल्क को सेनामंत्री (दीवाने-ए-आरिफ) के पद पर नियुक्त किया। राज्य के अन्तर्गत होने वाले षड्यंत्रों एवं विद्रोहों के विषय में पूर्ण जानकारी प्राप्त करने के लिए गुप्तचर विभाग का भी गठन किया। उसने वजीर से सैनिक और आर्थिक अधिकार छीन लिये। बलबन की शासन-व्यवस्था का मुख्य आधार मजबूत सैन्य संगठन तथा संगठित गुप्तचर व्यवस्था थी।

Continue......

05.12.2020

Dr. Madan Paswan, History.

Class :- B.A. Part-I (Sub.) Paper — from page no. 1 only

पाठ्यक्रम Unit-II : Ancient India :-

(i) Mauryan Empire – Chandragupta Mauryan :-

मौर्य वंश की स्थापना चन्द्रगुप्त मौर्य ने की थी, जो एक साधारण कुल और परिवार के थे। ब्राह्मणवादी परम्परा के अनुसार, वे नन्दों के रनवास में रहने वाली एक शूद्र महिला, मुरा की कोख से पैदा हुए थे। हालाँकि, प्राचीन बौद्ध परम्परा से पता चलता है कि मौर्य, नेपाली तराई के पास गोरखपुर क्षेत्र के पीपहलिवन के छोटे गणराज्य के क्षत्रिय वंश या शासक वंश के थे। यह सम्भव है कि चन्द्रगुप्त भी इसी कबीले से रहे हों। उन्होंने नन्द शासन के अंतिम दिनों का लाभ उठाया। चाणक्य, जिन्हें कौटिल्य भी कहा जाता है, उनकी मदद से चन्द्रगुप्त ने नन्दों का प्रभुत्व मिटाकर मौर्य वंश के शासन की स्थापना की। चन्द्रगुप्त चाणक्य के कूटनीतियों के माध्यम से आगे बढ़ते गये। नौवीं शताब्दी में विशाखदत्त रचित नाटक "मुद्राराक्षस" में चन्द्रगुप्त के शत्रुओं के विरुद्ध चाणक्य द्वारा रची गई कूटनीतियों का वर्णन है। इस विषय पर आधुनिक समय के कई नाटक लिखे गए हैं।

इतिहासकार 'जस्टिन' के अनुसार, 600000 सेना के साथ चन्द्रगुप्त ने संपूर्ण भारत को जीत लिया था। यह बात सच हो या न हो, लेकिन इतना सच है कि चन्द्रगुप्त ने सिन्धु के पश्चिमी क्षेत्रों पर शासन कर रहे सेल्यूकस के शिकंजे से उत्तर-पश्चिमी भारत को मुक्त कराया। यूनानी बादशाह के साथ युद्ध में, चन्द्रगुप्त विजयी साबित हुए। आखिरकार, दोनों के बीच शान्ति समझौता हुआ एवं 500 हाथी के बदले में सेल्यूकस ने उन्हें न केवल अपनी बेटी, बल्कि पूर्वी अफगानिस्तान, बलूचिस्तान और सिन्धु का पश्चिमी इलाका भी दे दिया। इस प्रकार, चन्द्रगुप्त ने विशाल साम्राज्य कायम किया, जिसमें बिहार, उड़ीसा और बंगाल ही नहीं, पश्चिमी और उत्तर-पश्चिमी भारत और दक्कन भी शामिल थे। केरल, तमिलनाडु और उत्तर-पूर्वी भारत के कुछ हिस्सों के अलावा, मौर्य ने लगभग पूरे उपमहाद्वीप पर शासन किया। उत्तर-पश्चिम में, उन्होंने उन खास क्षेत्रों पर भी हकदावा बनाया, जिन्हें ब्रिटिश साम्राज्य भी अपना हिस्सा नहीं बना पाया। मौर्य ने गणराज्यों या संघों को भी जीत लिया, जिसे कौटिल्य, साम्राज्य विस्तार में बाधक मानते थे।

Continue .....